जन्म मरण जरा नाशन कारन, धार देहु ढरकाई।भ०।
जंबूदीप भरत आरजमें, सोरठ देश सोहाई।
सेसावनके निकट अचल तहँ, नेमिनाथ शिवपाई॥भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संग घसाई।
भव दुखताप मिटावन लखके, अरचौं जिनपद आई।भ०।

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

शसि सम श्वेत वर्ण मुक्ता शित, अछत अखंड सुहाई।
चरन शरन प्रभू अक्षै निधि लख, पुंज दिये सो पाई।भ०।

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

कुसुम वर्णपन विविध गंध जुत,चुन चुन भेट धराई।
पूजन किय हो शील वर्द्धना,मनोवाण जय लाई॥भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

खाजा ताजा मोदक गूजा, फेणी सरस बनाई।
षट्रस व्यञ्जन मिष्ट सुधामय, हेम थार भर लाई।भ०।

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

दीप ललित कर घृत पूरित भर, उज्ज्वल जोति जगाई ।
करों आरती जिनपद केरी, मिथ्या तिमिर पलाई । भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई ।
खेय धनंजय धूप धूम मिस, वसु विधि देय जराई । भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला दाड़िम श्रीफल पिस्ता, पुंगीफल सुखदाई ।
कनक पात्र धर भविजन पूजें, मनवांछित फल पाई । भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अष्ट द्रव्यका अर्घ सँजोवो, घंटा नाद बजाई ।
गीत नृत्य कर जजों 'जवाहर,' आनन्द हर्ष बधाई । भ०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला ।

जोगीरासा छंद ।

उर्जयंति गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे ।
राजुलपति शिवधाम विराजे, उत्तम तीरथ जो है ॥
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहँ पाई ।
तास तनी महिमाको वरने, श्रवण सुनत हरषाई ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद।

जै जै जै नेमि जिनन्द चन्द्र। सुर नर विद्याधर नमत इन्द्र॥
जै सोरठ देश अनेक थान। जूनागढ़पै शोभित महान॥ २॥
तहँा उग्रसेन नृप राजद्वार। तोरण मंडप शुभ बने सार॥
जै समुदविजय सुत व्याह काज। आये हर बलि जुत आन साज॥३॥
तहँ जीव बँधे लख दया धार। रथ फेर जंतु बंधन निवार॥
द्वादश भावन चिंतवन कीन। भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन॥ ४॥
तज परिग्रह परिणय सर्व संग। है अनागार विजई अनंग॥
धर पंच महाव्रत तप मुनीश। निज ध्यान धरो हो केवलीश॥५॥
इस ही सुथान निर्वाण थाय। सो तीरथ पावन जगत माय॥
अरु शंभु आदि प्रद्युम्न कुमार। अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार॥६॥
पुनि राजुल हू परिवार छाँड़। मन वचन कायकर जोग मांड़॥
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर। सन्यास धार तजके शरीर॥७॥
तिय लिंग छेद सुर भयो जाय। आगामी भवमें मुक्ति पाय॥
तहँ अमरगण उर धर अनन्द। नितप्रति पूजत हैं श्रीजिनन्द॥८॥
अरु निरतत मघवा[1] युक्तनार, देवनकी देवी भक्ति धार॥
ता थेई थेई करन जाय। फिरि फिरि फिरि फिरिकी लहाय॥९॥
मुहचंग बजावत तारबीन। तननन तननन तन अति प्रवीन॥
कंसाल ताल मिरदंग और। झालर घंटादिक अमित शोर॥१०॥
आवत श्रावकजन सर्व ठाम। बहु देश देश पुर नगर ग्राम॥
हिलमिल सब संघ समाज जोर। हय गय बाहन चढ़ रथ बहोर॥११॥
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय। नर नारिउ पावत पुण्य आय॥
को बरनत तिस महिमा अनूप। निश्चय सुर शिवके होय भूप॥ १२॥

घत्ता।

श्रीनेमि जिनन्दा आनन्द कंदा, पूजत सुर नर हित धारी।
तिस नमत 'जवाहर' जुग कर शिरधर, हर्ष धार गड़ गिरनारी१३

१ इन्द्र।

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रसे नेमिनाथ शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बहत्तर कोटि सात सौ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

जे नर वंदत भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार ॥ १४ ॥

चौपाई ।

सम्वत् विक्रमराय प्रमानं । वसु जुगं निधि इक अंक सुजान ॥
पौष मास पख सोम बखान । पंचमि तिथि रविवार शुभ जान ॥१५॥
रच्यौ पाठ पुजन सुखदाय । पढ़त सुनत चित अति हुलसाय ॥
जात्रा करें धन्य ते जीव । पावें फल ह्वै शिवतिय पीव ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः ।

---

श्रीयुत भगोतीलालजी कृत

## ९ श्रीशत्रुंजय पूजा ।

चौपाई ।

श्रीशत्रुंजयशिखर अनूप ।
पांडव तीन वड़े शुभ भूप ।
आठ कोडि मुनि मुक्ति प्रधान ।
तिनके चरण नमूं धर ध्यान ॥ १ ॥
तहाँ जिनेश्वर बहुत सरूप ।
शान्तिनाथ शुभ मूल अनूप ॥

तिनके चरण नमूं त्रिकाल।
तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

त्रोटक छंद।

क्षीरोदधि नीरं उज्जल सीरं, गंध गहीरं ले आया।
मैं सन्मुख आया धार दिवाया, शीस नवाया खोल हिया॥
पांडव शुभ तीनं सिद्ध लहीनं, आठ कोडि मुनि मुक्त गये।
श्रीशत्रुंजय पूजों सन्मुख हूजो, शान्तिनाथ शुभ मूक नये॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि लाऊं गंध मिलाऊं,
केशर डारी रंग भरी।
जिन चरन चढ़ाऊं सन्मुख जाऊं,
व्याधि नशाऊं तपत हरी॥ पां०॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे,
लखि निर्दोखे पुंज धरूं।

अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो,
निजरस पीजो चरण परूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकासी,
आनंद रासी ले आयो ।
मो काम नशाया शील बढ़ाया,
अमृत छाया सुख पायो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज शुभ लाया थार भराया,
मंगल गाया भक्ति करी ।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया,
ताल बजाय सेवकरी ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक ले आया जोति जगाया,
तुम गुण गाया चरण परूं ।
मैं शरणे आया शीस नवाया,
तिमिर नशाया नृत्या करूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कुटाई धूप बनाई,
अग्नि डार जिन अग्र धरों।
तुम कर्म जराई शिव पहुँचाई,
होय सहाई कष्ट हरो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे,
लख निर्दोखे भेट धरूं।
सेवककी अरजी चितमें धरजी,
कर अब मरजी मोक्ष वरूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाई थार भराई,
सन्मुख आई नजर करो।
तुम शिवसुखदाई धर्म बढ़ाई,
हर दुखदाई अर्घ करों ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा ।

**पूरण अर्घ बनाय कर, चरणनमें चित लाय ।**
**भक्तिभाव जिनराजकी, शिव रमणी दरशाय ॥**

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो **पूर्णार्घं** निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

## जयमाला ।

पद्धड़ी छंद ।

जय नमन करूं शिर नाय नाय, मोकूं वर दीजे हे जिनाय ।
तुम भक्ति हियेमें रही छाय, सो उमग उमग अरु प्रीति लाय ॥१॥
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पंडितजन लहैं पार ॥
जय तुच्छ बुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हियेमें रही आन ॥ २ ॥
जय श्रीशत्रुंजय शिखर जोय, निर्वाणभूमि जानो जु सोय ॥
जहाँ पांडव तीन जु मुक्ति होय, जय राय युधिष्ठिर भीम जोय॥३॥
जय अरजुन जानो धनुष धीर, तासम नहिं जानो कोइ वीर ॥
जय आठ कोडि मुनि और सोय, तिन वरी नारि रंभा जु लोय।४
जय सही परीषह बीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय ।
जय कायर कँपै सुनो जोय, वे ध्यानारूढ़ भये जु सोय ॥ ५॥
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय ।
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय ॥ ६ ॥
जय सेवक जनकी करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चारित्र होय ॥
जय रुलो नहीं संसार माय, अरु थोड़े दिनमें मुक्ति पाय ॥ ७ ॥
जय 'धर्मचन्द्रजी' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसों मेल होय ।
वे धर्मीजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय ॥ ८ ॥
तुम शत्रुंजय पूजा बनाय, तो बांचें भविजन प्रीति लाय ।
जय 'लाल भगोतीलाल' सोय, तिन रची पाठ पूजन जु सोय।९।

जय घाट बाढ़ कछु अर्थ होय, सोधो समार जैसे जु सोय।
जय भूल चूक जामें जु होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय ॥१०॥
जय सम्बतसर गुनईस जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय।
जय पौष सुदी द्वादश जु होय, अरु बार शुक्र जानो जु सोय।११।
जय सेवक विनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ।
जय चाह रही नहीं और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय ॥१२॥

सोरठा।

भक्तिभाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको।
मंगल आरति गाय, चरणन शीस नवायकें ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे तीन पांडव और आठ कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद।

हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजूं, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी, करी बहु विधि थापना॥
जिनराज धर्म समान जगमें, और नाहीं हित घना।
ताते सु जानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ॥ १४ ॥

इत्याशीर्वादः।

---

श्रीयुत पं० दीपचंदजी परवार कृत

## १० श्रीतारंगागिरि पूजा।

वरदत्तादिक ऊंठ कोटि मुनि जानिये,
मुक्ति गये तारंगागिरिसे मानिये।

तिन सबको शिरनाय सु पूजा ठानिये,
भवदधि तारन जान सु विरद बखानिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्तादि साड़े तीन कोटि पुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

शीतल प्रासुक जल लाय भाजनमें भरके,
जिन चरनन देत चढ़ाय रोग त्रिविध हरके।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन लाय केशर माँहि घसे,
जिन चरण जजूं चित लाय भव आताप नसे।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल अखंड भर थार उज्ज्वल अति लीजे,
अक्षयपद कारणसार पुंज सु ढिग कीजे।

तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

चंपा गुलाब जुहि आदि फूल बहुत लीजे,
पूजों श्रीजिनवर पाद कामविथा छीजे ।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना पकवान बनाय सुवरण थाल भरे,
प्रभुको अरचों चित लाय रोग क्षुधादि टरे ।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप कपूर जगाय जगमग जोति लसे,
करूं आरति जिन चित लाय मिथ्या तिमिर नसे ।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरु धूप सुवास खेऊं प्रभु आगे।
जल जाय कर्मकी राशि ध्यानकला जागे ॥
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी।
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल कदली बादाम पुंगीफल लीजे,
पूजों श्रीजिनवर धाम शिवफल पालीजे।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

शुचि आठों द्रव्य मिलाय तिनको अर्घ करों,
मन वच तन देहु चढ़ाय भवतर मोक्ष वरों।
श्रीतारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला।

सोरठा।

वरदत्तादि मुनीन्द्र, ऊंठ कोटि मुक्तहि गये।
वंदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमनके कारणे॥ १॥

पद्धरी छंद।

गुजरात देशके मध्य जान, इक सोहे ईडर संसथान।
ताकी दिशि पच्छिममें बखान, गिरि तारंगा सोहे महान॥ १॥
तहँते मुनि ऊंठ करोड़ सोय, हन कर्म सबे गये मोक्ष सोय।
ता गिरिपर मंदिर है विशाल, दर्शनतें चित होवे खुशाल॥ २॥
नायक सुमूल संभव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप।
पुनि तीन टोंकपर दर्श जान, भविजन वंदत उर हर्ष ठान॥ ३॥
तहाँ कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजी तीजी है मोक्ष सिद्ध।
तिनपर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिये सुजान॥ ४॥
जो बंदे भविजन एक बार, मनवांछित फल पावे अपार।
वसु विधि पूजे जो प्रीति लाय, दारिद्र तिनको क्षणमें पलाय॥ ५॥
सब रोग शोक नाशे तुरंत, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवंत।
अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भवके दुःख डारे सु खोय॥ ६॥
इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कविको लहे पार।
अब बहुत कहा कहिये बखान, कहे 'दीप' लहें ते मोक्षथान॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्त सागरदत्तादि साढ़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा, ।

घत्ता।

तारंगा बंदों मन आनन्दो, ध्याऊं मन वच शुद्ध करा।
सब कर्म नशाऊं शिवफल पाऊं, ऊंठ कोटि मुनिराजवरा॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत

## ११ श्रीपावागढ़ पूजा ।

दोहा ।

श्रीपावागिरि मुकति-शुभ, पाँच कोडि मुनिराय ।
लाड़ नरेन्द्रको आदि दे, शिवपुर पहुँचे जाय ॥ १ ॥
तिनको आह्वानन करों, मन वच काय लगाय ।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रसे लाड़ नरेन्द्र आदि पाँच करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

### अष्टक ।

छंद त्रोटक ।

जल उज्ज्वल लीनो प्रासुक कीनो, धार सु दीनो हितकारी
जिन चरन चढ़ाऊं कर्म नशाऊं, शिवसुख पाऊं बलिहारी
पावागिरि बन्दों मन आनन्दो, भव दुख खंदो चितधारी।
मुनि पाँच जु कोडं भवदुख छोड़ं, शिवसुख जोडं सुखभारी

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन घसि लाऊं गंध मिलाऊं, सब सुख पाऊं हर्ष बढ़ो
भव बाधा टारो तपत निवारो, शिवसुख कारो मोद बढ़ो ॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

गजमुक्ता चोखे बहुत अनोखे, लख निरदोखे पुंज करूं ।
अक्षयपद पाऊं और न चाऊं, कर्म नशाऊं चरण परूं॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल मगाऊं गन्ध लखाऊं, बहु उमगाऊं भेट धरूं॥
मम कर्म नशावो दाह मिटावो, तुम गुन गाऊं ध्यान धरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा० ॥ ४ ॥

नेवज बहु ताजे उज्ज्वल साजे, सब सुख काजे चरन धरूं ।
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धर्म बढ़ावे चैन करूं ॥ पा०॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वमीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपककी जोतं तम छय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं ।
तुम आरति गाऊं भक्ति बढ़ाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

बहु धूप मँगाऊं गंध लगाऊं, बहु महकाऊं दश दिशिकों ।
धर अग्नि जलाई कर्म खिपाई, भवजनभाईसब हितको॥पा.

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

**फल प्रासुक लाई भवजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं ।**
**शिवपदकी आशा मन हुलासा, कर खुहलासा मोक्ष वरूं ॥**

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

**वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं ।**
**पूजाको गाऊं हर्ष बढ़ाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ॥ पा० ॥**

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला ।

सोरठा ।

करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके ।
पूजों श्रीजिनराय, पावागिरि वंदों सदा ॥

चाल जोगीरासाकी ।

श्रीपावागिरि तीर्थ बड़ो है, वंदत शिवसुख होई ।
रामचन्द्रके सुत दोय जानो, लाड़ नरेन्द्र जु सोई ॥
इनहिं आदि दे पाँच कोटि मुनि, शिवपुर पहुँचे जाई ॥
सेवक दो कर जोर बीनवे, मन वच कर चितलाई ॥ १ ॥
कर्म काट जे मुक्त पधारे, सब सिद्धनमें जोई ।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई ॥
दर्श अनंतो ज्ञान अनंतो, देखे जाने सोई ।
समय एकमें सब ही झलके, लोकालोक जु दोई ॥ २ ॥

ज्ञान अतेंद्री पूरन तिनके सुक्ख अनंतो होई ।
लोक शिखरपर जाय बिराजे, जामन मरन न होई ॥
जा पदको तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई ।
भक्ति भावकर निशि दिन बन्दों, निशि दिन शीस नवाई ॥ ३ ॥
'धर्मचन्द्र' श्रावककी बिनती, धर्म बड़ो हित दाई ।
जो कोई भविजन पूजन गावें, तन मन प्रीति लगाई ॥
सो तैसो फल जल्दी पावे, पुण्य बढ़े दुख जाई ।
सेवकको सुख जल्दी दीजो सम्यक् ज्ञान जगाई ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढ़से लाड़ नरेन्द्र और पाँच करोड़ मुनि मोक्ष-पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रोटक छन्द ।

श्रीजिनवरराई करमन भाई, धर्म सहाई दुख छीजे ।
पूजा नित चाहूं भक्ति बढ़ाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे ॥
सुन भवजन भाई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई नृत्य करों ।
सब ही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो ॥५॥

इत्याशीर्वादः ।

---

श्रीयुत किशोरीलालजी कृत

## १२ श्रीगजपंथ पूजा ।

अडिल्ल ।

श्रीगजपंथ शिखर जगमें सुखदायजी ।
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी ॥

और गये बलभद्र सात शिवधामजी।
आह्वानन विधि करूँ त्रिविध धर ध्यानजी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथाचलसे सप्त बलभद्र आदि आठ कोडि मुनि सिद्ध-पद प्राप्तये अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

चाल जोगीरासाकी।

कंचन मणिमय झारी लेके, गंगाजल भर ल्याई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई॥
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहाँपर करम खपाई।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूँ तिन्हें शिरनाई॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चन्दन घसि, केशर सुवरण भृंग भराई।
भव आताप निवारन कारन, श्रीजिनचरण चढ़ाई॥ ब०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत उज्ज्वल चन्द्रकिरण सम, कनक थाल भर लाई।
अक्षय सुख भोगनके कारन, पूजूं देह हुलसाई॥ ब०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

१ कलश।

पुष्प मनोहर रंग सुरंगी, आवे बहु महकाई ।
कामवाणके नाशन कारन, जिनपद भेंट धराई॥ बल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर बावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई ।
क्षुधावेदनी रोग हरनको, पूजों श्रीजिनराई ॥ बल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बाती कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल जोति जगाई ।
मोहतिमिरके दूर करनको, करो आरती भाई॥ बल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कृस्नागरु लेके, दस गंध धूप बनाई ।
खेय अगनिमें श्रीजिन आगे, करम जरें दुखदाई॥ बल० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्रीफल आदि सुहाई ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, भेंट धरों गुणगाई ॥ब०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल आदि वसु दरब अति,
उत्तम मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके,
श्रीजिन चरन चढ़ाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला ।

गीता छंद ।

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे ।
नर नारि जे नित करत बंदन, तिन सुजश जग बिस्तरे ॥
इस थानतें मुनि आठ कोडी, परमपदकूं पायके ।
तिनकी अबे जयमाल गाऊँ, सुनो चित हुलसायके ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

जय गजपंथा गिरिशिखर सार। अति उन्नत है शोभा अपार ॥
ताकी दक्षिण दिश नगर जान। मसरूल नाम ताको प्रधान ॥ २ ॥
तहाँ धरमशाला बनी महान । ता मध्य लसे जिनवर सुथान ॥
तहाँ बने शिखर शोभित उतंग। यह चित्र विचित्र नाना सुरंग ॥ ३ ॥
चारों दिशि गुमठी लसत चार । चित्राम रचित नाना प्रकार ॥
तिनके ऊपर ध्वजा फहरात । मानुष बुलावत करत हाथ ॥ ४ ॥
तहाँ गुम्मजमें श्रीपार्श्वनाथ । राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात ॥
तिन दरशन बंदन करन जात । पूजत हैं नित प्रति भव्य भ्रात ॥५॥
जिनमन्दिरमें रचना विशेष । आरास रचित अद्भुत अनेक ॥
बेदी उज्ज्वल राजत रँगीन । अति ऊँचे सोहे शिखर तीन ॥ ६ ॥
तिनके ऊपर कलशा लसंत । चन्द्रोपम ध्वज दर्पन दिपंत ॥
त्रय कटनी खंभा चार माह । इन्द्रनकी छबि वरनी न जाय ॥७॥

ऊपरली कटनी मध्य जान । अन्तिम तीर्थेश विराजमान ॥
भामंडल चँवर सु छत्र तीन । पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८॥
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल । तिष्ठत ता आगे रक्षपाल ॥
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव । जहाँ पूजा करते भव्य जीव ॥ ९ ॥
आगे मंडप रचना विशाल । तहाँ सभा भरे है सदा काल ॥
जहाँ बाँचत पंडित शास्त्र आय । कोई जिनवर गुण मधुर गाय॥१०॥
कोई जाप जपे चरचा करंत । कोई नृत्य करत बाजे बजंत ॥
नौबत झालर घंटा सुझांझ । पुनि होत आरती नित्य सांझ ॥११॥
मंन्दिर आगे सुन्दर अरन्य । तरु फल फलत दीसे रमन्य ॥
अति सघन वृक्ष शीतल सु छाँय । जहाँ पथिक लेत विश्राम आय।१२
इस उपवनमें बहु विध रसाल । चाखत जात्री होवें खुशाल ॥
नीबू नारंगी अनार जाम । सीताफल श्रीफल केल आम ॥ १३ ॥
अमली जामन ककड़ी अरंड । कैथोड़ी ऊँचे लगे झुंड ।
सेतूत लेसवो अरु खजूर । खारक अंजीर अरीठ पूर ॥ १४ ॥
फफनस बोर वड़ नीम जान । पुनि पुष्पवाटिका शोभमान ॥
चंपो जु चमेलि गुलाब कुंज । जाई जु मोगरो भ्रमर गुंज ॥ १५ ॥
गुलमहदी और अनेक वेल । तिन ऊपर पंक्षी करत केल ॥
या बाग माहिं गंभीर कूप । शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥ १६ ॥
ता पीवत ही गद सकल नाश । यह अतिक्षय क्षेत्रतनो प्रकाश ॥
बँगला विशाल रमणीक जान । भट्टारक तिष्टनको सु थान ॥१७॥
परकोट बनो चउ तरफ सार । मध दरवाजो अति शोभकार ॥
ताके ऊपर नौवत बजंत । सुनके जात्री आनँद लहंत ॥ १८ ॥
यहाँ दंडकवनकी भूमि संत । तसु निकट शहर नाशिक बसंत ॥
तहाँ गंगा नाम नदी पुनीत । बैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ॥ १९ ॥
पुनि त्रिम्बक सीतागुफा कीन । गजपंथ धाम सबमें प्रचीन ॥
भट्टारकजी क्षिमकीर्त्ति आय । बंदे गजपंथा शिखर जाय ॥ २० ॥

मन्दिरकी नींव दई लगाय । पुनि पैड़ी ऊपरको चढ़ाय ॥
दो शतक पिचौत्तर है सिवान । तसु आगे मोटी भीत जान ॥ २१ ॥
इक होद भर्‍यो निर्मल सु नीर । शीतल सु मिष्ट राजत गँहीर ।
भवि प्रक्षालित वसु दरव आन । कोई तीर्थ जानं कर है सनान ॥२२॥
त्रय गुफा मध्य दरशन करंत । बलभद्र सात तिष्ठत महंत ॥
इक बिम्ब लसत उन्नत विशाल । श्रीपार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ॥ २३ ॥
द्रय मानभद्र इक चरण पाद । मुनि आठ कोडि थल है अनाद ॥
वंदन पूजन कर धरत ध्यान । निज जन्म सुफल मानत सुजान ॥२४॥
यहाँसं उतरत गिरितट सु थान । इक कुंड नीर निर्मल बखान ॥
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीत । भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥ २५ ॥
तिनके सु चरणपादुक रचाय । अवलोकन कर निज थल सु आय॥
कोई फेरी पर्वतकी करंत । इमि वंदनकर अति सुख लहेत ॥ २६ ॥
श्रीमुनीकीर्ति महाराज आय । श्रावकजनको उपदेश थाय ॥
पुनि नानचंद अरु फतहचंद । शोलापुरवासी धरमकंद ॥ २७ ॥
हूमड़ जैनी उपदेश धार । करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार ॥
संवत् उगणीस अरु तियाल । सुधि तेरस माघतनी विशाल ॥ २८ ॥
कल्यान पाँच कीनो उछाव । करवाये अति उत्तम सुनाव ॥
श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश । पधराये वेदीमें जिनेश ॥ २९ ॥
भट्टारकजी दियो सूर मंत्र । कीने पुनि जंत्र अनेक तंत्र ॥
मानस सु थंभ रचिये उतंग । कञ्चन कलशा शोभें उतंग ॥ ३० ॥
बहु संघ जुरे तिनकू बुलाय । भकती कीनी उर हरष ल्याय ॥
बहु विधि पकवान बनाय सार । जौनार दई आनंद धार ॥ ३१ ॥
सुदि पूनम माघतनी सुजान । पूरण हुती उत्सव महान ॥
याही तिथिकूं उत्तम सुजोय । यात्रा उत्सव वर साल होय ॥ ३२॥
पुनि सदावरत नित प्रति बटंत । कोई विमुख जाय नाहिं साधु संत ॥
यहाँ देश देशके संघ आय । उत्सव करते हैं पूजन कराय ॥ ३३ ॥

वे दरब करत भंडार सोय। कोई करत रसोई मुदित होय॥
बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ। आवें जात्री मुख करत पाठ॥ ३४॥
संवत उगणीसौ उणचास। बुध अष्टम रवि दिन पौष मास॥
ये पूजन विधि कीनी बनाय। सज्जन प्रति बिनती यही भाय॥३५॥
जो भूल चूक तुक भंग होय। तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय॥
गजपंथ शिखर मुनि आठ कोड। बलभद्र सात नमि हाथ जोड़॥३६॥

दोहा।

यह गजपंथा शिखरकी, पूज रची सुखदाय।
'लालकिशोरी' तुच्छ बुध, हाथ जोड़ सिरनाय॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथ सिद्धक्षेत्रसे सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद त्रिभंगी।

जय जय भगवंता श्रीगजपंथा, वंदत संता भाव धरें।
सुर नर खग ध्यावें भगत बढ़ावें, पूज रचावें प्रीति करें॥
फल सुरपद पावें अमर कहावें, नरपद पावें शिव पावें।
यह जान सु भाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावें॥ ३८॥

इत्याशीर्वादः।

---

श्रीयुत स्व० पं० सवाई सिंगई गोपालसाहजी कृत

## १३ श्रीतुंगीगिरि पूजा।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुंगीगिरि शुभ थान।
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम, हनू, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य नील, महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितातो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

## अष्टक।

गंगाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारों।
परिग्रह तिसना लगी आदिकी, ताको है निरवारो॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजों मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चन्दन केशर गार, भली विधि धार देत पग आगे।
भव भरमन आताप जासतें, पूजत तुरतहिं भागे॥रा०॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों।
अक्षयपदकों प्रापति कारन, या सम और न दूजो। राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

**कमल केतकी वेल चमेली, जापर अलि गुंजावे ।**
**पुष्पनसों अरचों तुम चरनन, कामविथा मिट जावे। राम०**

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

**गूजा खाजे व्यंजन ताजे, तुरतहिं घृत उपराजे ।**
**दृग सुख कारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे॥राम०**

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

**दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे ।**
**नाशे मिथ्यातम अनादिको, ज्ञान भानु परकाशे ॥ राम०**

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

**अगर तगर कृत्स्नागरु चन्दन, जे सुवास मन भावें ।**
**खेवत धूप धूमके मिसकर, दुष्ट करम उड़ जावें ॥ राम०**

ॐ ह्री श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

**श्रीफल पुंगी शुचि नारंगी, केला आम्र सुवासी ।**
**पूजत अष्ट करम दल धूजत, पाऊँ पद अविनासी ॥ राम०**

ॐ ह्री श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये **फलं** निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

**जल फलादि वसु दरव साजके, हेमपात्र भर लाऊँ।**
**मन वच काय नमूं तुव चरना, बार बार शिर नाऊँ॥राम०**

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

## जयमाला।

दोहा।

राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाय।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजों मन वच काय ॥ १ ॥
तुम पद प्रापत कारने, सुमरों तुव गुणमाल।
प्रति माफक वरनन करों, सार सुभग जयमाल ॥ २ ॥

धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
वो पर्वत हैं अति तुंग चूलिका भारी।
मनो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ॥ ३ ॥
पहलो है मंगी नाम तुंगी है दूजो।
जहाँ चढ़त जीव थक जात करम चिर धूजो॥
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
धन्य धन्य मुनिराज कठिन व्रत धारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ ४ ॥
जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी।
अरु गव गवाक्ष महानील नील अघहारी॥
इन आदि निन्यानवे कोडि मुनी तप कीना।
लयो पंचमगतिको वास बहुरि गत रही ना ॥ ५ ॥

मैं पूजों त्रिकरन शुद्धनसे अघ भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
तुम विरत अहिंसा लिया दयाके कारन।
ता पोखनको वच झूठ किया निरवारन॥ ६॥

पुनि भये अदत्ता वस्तु सरवके त्यागी।
नव वाढ़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी॥
चउवीस परिग्रह त्याग भये अनगारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥ ७॥

षट्काय दयाके हेतु निरख भू चाले।
वच शास्त्र उकत अनुसार असतको टाले॥
भोजनके षट् चालीस दोष निरवारे।
लख जंतु वस्तुको लेय देख भू धारे॥ ८॥

पन करन विषै चकचूर भये अविकारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
षट् आवश्यक नित करें नेम निरवाहे।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात न चाहें॥ ९॥

निज करसों लुचे केश राग तन भागी।
बालकवत निर्भय रहें वस्त्रके त्यागी॥
कबहुँ दंतधवन नहीं करें दया व्रतधारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥ १०॥

बिन जाँचे भोजन लेय उद्दंड अहारी।
लघु भुक्ति करें इक बार तपी अधिकारी॥
जामें आलस न बढ़े राग द्वै हीना।
निशि दिन रस आतम चखे करे विधि छीना॥ ११॥

कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥

वे भव्यनको उपदेश अघाती जारे।
भये मुकतिरमाके कंत अष्ट गुन धारे ॥ १२ ॥
तिन सिद्धनिको मैं नमों सिद्धिके काजा।
सिधथलमें वे मुह वास त्रिजगके राजा॥
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हें बहु भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता ।

तुम गुनमाला परम विशाला, जे पहरे नित भव्य गले ।
नाशैं अघजाला ह्वै सुख हाला, नित प्रति मंगल होत भले ॥ १४ ॥

इत्याशीर्वादः ।

---

श्रीयुत कन्हैयालालजी कृत

## १४ श्रीकुंथलगिरि पूजा ।

दोहा ।

**तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान ।**
**जहाँते मुनि शिवथल गये, पूजों थिर मन आन ॥**

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक ।

अडिल्ल ।

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सब छानके ।
कनक पात्रमें धार देत त्रय आनके ॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषायके ।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन दाह निकंदन केशर गारकें ।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल सोम समान अखंडित आनकें ।
हाटक थार भराय जजों शिर नायकें । पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायकें ।
दहन काम पन वाण धरों सुख पायकें ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

व्यंजन विविध प्रकार पगे घृत खांड़के ।
अरपत श्रीजिनराज छुधा ढिग छाँड़के ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

कनक थारमें धार कपूर जलायके ।
वोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर आदि दस वस्तु गंध जुत मेलके ।
करम दहनके काज दहों ढिग शैलके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके ।
शिवफल प्रापति काज जजों उमगायके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फलादि वसु दरव लेय थुत ठानके ।
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वप्रामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला ।

दोहा ।

तुम गुन अगम अपार गुरु, मैं बुधि कर हों बाल ।
पै सहाय तुव भक्तिवश, वरनत तुव गुनमाल ॥ १ ॥

छंद पद्धड़ी ।

कुल ऊँच राय सुत अति गँभीर । कुलभूषण दिशभूषण द्वै वीर ॥
लख राज-ऋद्धिका अति असार । वय बाल माहिं तप कठिन धार ।२
द्वादश विधि व्रतकी सहत पीर । तेरा विधि चारित धरत वीर ॥
गुन मूल बीस अरु आठ धार । सहैं परीषह दस अरु आठ चार॥३॥
भू निरखि जंतु कर नित बिहार । धर्मोपदेश देते विचार ॥
मुनि भरमत पहुँचे कुंथ शैल । पाहन तरु कंटक कठिन गैल ॥४॥
निर्जन वन लख भये ध्यान लीन । सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन ।
बहु सिंघ सरप अरु दैत्य आय । गरजत फुंकारत मुख चलाय ।।५॥
तहाँ राम लखन सीता समेत । ता दिन थिति कीनी थी अचेत ॥
मुनिपर वेदन यह लखत घोर । दोउ वीर उचारे वच कठोर ॥६॥
रे देव; दुष्ट तूं जाति नीच । मुनि दुखित किये तुझ आई मीच ॥
हम आगे तू कित भाग जाय । तुह देहैं दुकृतकी सजाय ॥ ७ ॥
यह कह दोऊ कर धनुष धार । हर बल लखि सुर डरपौ अपार ।
तब मान सीख मुनि चरण धार । ता छिन घाते विधि घाति चार॥८॥
उपजत केवल सुरकलप आय । रचि गंधकुटी पद शीस नाय ॥
सुन निज भव सुर आनंद पाय । जुग विद्या दे निज थल सिधाय९।
प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार । सुन धोरे जिनते भये पार ॥
मुनिराज अघाती घात कीन । गति पंचम थित अचल लीन ॥१०॥
पूजा सुर नर निरवान कीन । गत ऊंचतनो फल सुफल लीन ॥
भव भरमत हम बहु दुःख पाय । पूजें तुम चरना चित्त लाय॥११॥
अरजी सुन कीजे महर आप । तासों मेरा भव भ्रमन ताप ॥
बिनवे अधिकी क्या 'कनईलाल'।दुख मेट सकल सुख देव हाल १२

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष-पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपती।
मैं शरने आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हती मती ॥ १३ ॥

इत्याशीर्वादः।

---

स्व० कवि जवाहरलालजी कृत

## १५ श्रीमुक्तागिरि पूजा।

दोहा।

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार।
तातें पावन होत निज, नमों सीस कर धार ॥ १ ॥

गीता छंद।

येही जंबूद्वीप मध्य भरतक्षेत्र सो जानिये।
आरज सो खंड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये ॥
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहाँ।
कोडि साड़े तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुँचे जहाँ ॥ २ ॥

दोहा।

पारसप्रभुको आदि दे, चौवीसों जिनराय।
पूजों पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साड़े तीन करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

**परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिये।**
**हेम झारी मांहि भरके, धार सुन्दर दीजिये॥**
**तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो।**
**कोटि साड़े तीन मुनिवर, जहाँते शिवपुर लहो॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

**चंदन सु पावन दुख मिटावन, अति सुगंध मिलाइये।**
**डार कर कर्पूर केशर, नीर सों घिस ल्याइये॥ तीर्थ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

**विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे।**
**कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पावन परे॥तीर्थ ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

**सुरवृक्षके सम फूल लेकर, गंधकर मधुकर फिरें।**
**मदनबाण विनाशवेकों, प्रभु चरन पूजा करें॥ तीर्थ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

**छहों रसकर जुक्त नेवज, कनक थारीमें भरों ।**
**भावसे प्रभु चरन पूजों, क्षुधादिक मनकी हरो ॥तीर्थ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

**रतनदीप कपूर बाती, जोत जगमग होत है ।**
**मोहतिमिर विनाशवेंको, भानु सम उद्योत है ॥तीर्थ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

**कूट मलयागिरि सो चन्दन, अगर आदि मिलाइये ।**
**ले दशांगी धूप सुन्दर, अगन मांहि जराइये ॥ तीर्थ० ॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

**ल्याय येला लोंग दाडिम, और फल बहुते घने ।**
**नेत्र रसना लगे सुन्दर, फल अनूप चढ़ावने ॥ तीर्थ०॥**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

**जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने ।**
**लाय चरन चढ़ाय भविजन, मोक्षफलको पावने॥तीर्थ०।**

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा।

**मुक्तागिरिके सीसपर, बहुत जिनालय जान।**
**तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान ॥१॥**

## जयमाला।

पद्धड़ी छंद।

श्रीमुक्तागिरि तीरथ विशाल। महिमा जाकी अद्भुत रसाल॥
जुग पर्वत बीच परे दो कोन। मुक्तागिरि जहाँ सुखको सु भौन।२
चढ़िय सिवान जहाँ ऊपर सो भान। दहलानेपर सो सार जान।
यात्री जहाँ डेरा करें आय। अती मुदित ह्वै चित्त उमगाय॥ ३ ॥
ऊपर शुचि जलसों भरे कुंड। जहँ सपरे यात्रिनके सु झुंड॥
बहु विधिकी द्रव्य धरी सो धोय। पूजनको भविजन चले सोय ४
जहाँ मन्दिर बीच बने रसाल। पारसप्रभुकी मूरत विशाल॥
पूजत जहाँ भविजन हरष धार। भव भवको पुण्य भरे भंडार।५।
बावन जगह दर्शन जिनेश। पूजत जिनवरको सुर महेश॥
इक मन्दिरमें भुयरो जु सोय। प्रतिमा श्रीशान्तिजिनेश होय॥
दर्शन कर नरभव सुफल होय। जहाँ जन्म जन्मके पाप खोय ७
मैढ़ागिरिकी हैं गुफा भाय। मन्दिर सुन्दर इक साम काय॥
प्रतिमा श्रीजिनवर देवराज। दर्शन कर पूरन होंय काज॥ ८॥
मेढ़ागिरिके ऊपर सुजान। द्वय टोंक बनी अति सौम्यमान॥
इक पांड़े बालक मुनि कराय। इक भागबलीकी जान रमाय॥९॥
जहाँ श्रीजिनवरके चरण सार। वंदत मनवांछित सुखदातार॥
बावन मन्दिर जहँ शोभकार। महिमा तिनकी अद्भुत अपार॥१०॥
जहँ सुर आवत नित प्रति महेश। स्तुति करते प्रभु तुम जिनेश॥
जहाँ सुर नाचत नाना प्रकार। जै जै जै जै जै धुनि उच्चार॥ ११॥

थै थै थै अब नाचत सुचाल । अति हर्ष सहित नित नमत भाल ॥
मुहचंग उपंग सु तूर सजे । मुरली स्वर बीन प्रवीन बजे ॥ १२ ॥
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग । झननननननन नूपुर सु रंग ॥
तननननननन परे तसु तान । घनन घंटा करत ध्यान ॥ १३ ॥
इहि विधि वादित्र बाजें अपार । सुर गावत अत्र नाना प्रकार ॥
अतिशय जाके हैं अति विशाल । जहाँ केशर अब बरसे त्रिकाल ।१४।
अनहद नित बजें बाजें अपार । गंधोदकादिक वर्षाकी बहार ॥
तहाँ मारुत मंद सुगंध सोय । जिय जात जहाँ न विरोध होय ॥१५॥
अतिशय जहाँ नाना प्रकार । भविजन हियमें हरख धार ॥
जहाँ कोड़ जु साड़े तीन मान । मुनि मोक्ष गये सुनिये सुजान ॥१६॥
वंदत 'जवाहर' अब बार बार । भवसागरसे प्रभु तार तार ॥
प्रभु अशरन शरन आधार धार । सब विघ्न तूल गिरि जार जार॥१७
तू धन्य देव कृपानिधान । अज्ञान मिथ्यातम हरन भान ॥
प्रभु दयासिंधु जै जै महेश । भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥ १८ ॥
मैं बहुत भ्रम्यो चिरकाल काल । अब हो दयाल मुझे पाल पाल ॥
तातें मैं तुमरे शरण आय । यह अरज करूं पग शीस नाय ॥ १९ ॥
मम कर्म बंध देऊ चूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रसे साड़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता ।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि है है पूरी ।
अति कर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवीको सुखकारी ॥ २० ॥

दोहा ।

अठरा सौ इक्यानवे , वैशाख मास तम छीन ।
तिथि दशमी शनिवारकी, पूजा समापत कीन ॥ २१ ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्त्तिजी कृत

## १६ श्रीसिद्धवरकूट पूजा।

दोहा।

सिद्धकूट तीरथ महा, है उत्कृष्ट सुथान।
मन वच काया कर नमों, होयं पापकी हान॥ १॥
दोय चक्री मन्मथ जु दस, गये तहँते निर्वान।
पद पंकज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान॥ २॥
रेवाजीके तटनतें, हूंठ कोडि मुनि जान।
कर्म काट तहँते गये, मोक्षपुरी शुभ थान॥ ३॥
जगमें तीर्थ प्रधान है, सिद्धवरकूट महान।
अल्पमती मैं किमि कहों, अद्भुत महिमा जान॥४॥

अडिल्ल छंद।

इन्द्रादिक सुर जाय, तहाँ बन्दन करें।
नागपति तहँ आय, बहुत थुति उच्चरें॥
नरपति नित प्रति जाय, तहाँ बहु भावसों।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसे दो चक्री दश कुमारादि साढ़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

चाल-नंदीश्वर पूजाकी।

उत्तम रेवा जल ल्याय; मणिमयं भर झारी।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, जन्म जरा हारी॥
द्वय चक्री दस कामकुमार, भवतर मोक्ष गये।
तातें पूजों पद सार, मनमें हरष ठये॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि०॥ १॥

मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारी।
प्रभु चरनन देत चढ़ाय, भवभय दुखहारी॥द्वय चक्री०

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि०॥ २॥

तंदुल उज्ज्वल अविकार, मुकतासम सोहे।
भरत कंचनमय थाल, सुर नर मन मोहे॥द्वय चक्री०

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं। नि०॥ ३॥

ले पहुप सुगंधित सार, तापर अलि गाजे।
जिन चरनन देत चढ़ाय, कामव्यथा भाजे॥ द्वय चक्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि०॥ ४॥

**नवज नाना परकार, षट्रस स्वाद मई ।**
**पद पंकज देहुँ चढ़ाय,सुवरन थार लई ।। द्वय चक्री द्व० ॥**
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

**मणिमय दीपकको ल्याय, कदली सुत बाती ।**
**जोती जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती।। द्वय चक्री०**
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

**कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई ।**
**वसु दुष्ट करम जर जाँय, भव भव सुख लेई ।। द्वय चक्री०**
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

**श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई ।**
**लेकर बहु फल सुख धाम,जिनवर पूज ठई ।।द्वय चक्री०।।**
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा ॥ ८ ॥

**जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी ।**
**चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करों भारी।।द्वय चक्री०।।**
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## जयमाला ।

दोहा ।

**सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहूँ बनाय ।**
**अति विचित्र रमनीक अति, कहत अल्प कर भाय ॥१॥**

पद्धरी छंद।

जय पर्वतं अति उन्नत विशाल। तापर त्रय मन्दिर शोभकार॥
तामें जिनबिम्ब विराजमान। जय रतनमई प्रतिमा बखान॥२॥
ताकी शोभा किमि कहे सोय। सुरपति मन देखत थकित होय॥
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान। तिनकूं वरनूं अब प्रीति ठान॥३॥
ताकी पूरव दिशि तासु जान। तामें सु कमल फूले महान॥
कमलनपर मधुकर भ्रमे जोय। ता धुनकर पूरित दिशा होय॥४॥
ता सरवरपर नाना परकार। द्रुमे फल रहे अति शोभकार॥
छह ऋतुके वृक्ष फूले फलाय। ऋतुराजे सदा क्रीड़ा कराय॥५॥
मंदिरनकी दक्षिन दिशा सार। सुरनदी बहे रेवा जु सार॥
ताके तट दोनों अति पवित्र। विद्याधर बहु विधि करें नृत्य॥६॥
फिर तहँ ते उत्तर दिशा जान। इक कुंड बनो है शोभमान॥
ता कुंड बीच जात्री नहाय। तिन बहुत जनमके पाप जाँय॥७॥
ता कुंड ऊपर अति विचित्र। इक पाडूशिला है अति पवित्र॥
तिस थान विच देवेन्द्र सोय। जिनबिम्ब धरे हैं सीस जोय॥८॥
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल। कावेरी सोहे अति रसाल॥
इन आदि मध्य जे भूमि जान। जय स्वयंसिद्ध परवत महान॥९॥
तापर तप धारो दोय चक्रीशै। दस कामकुमार भये जगतईश॥
इन आदि मुनि आहूठ कोड़। तिनको बंदों मैं हाथ जोड़॥१०॥
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान। देवन्द्र जुआसन कँपो जान॥
तब अमरपुरीतें इन्द्र आय। तहँ अष्ट द्रव्य साजे बनाय॥११॥
तब पूजा ठाने देव इन्द्र। सब मिलकें गावें शतक इन्द्र॥
तहँ यात्री आवें झुंड झुंड। सब पूज धरें तंदुल अखंड॥१२॥
कोई श्रीफल ल्यावे अरु बदाम। कोई पुंगीफल सु नाम॥
कोई अमृतफल केला सु ल्याय। कोई अष्ट द्रव्य ले पूज ठाय१३

१ वृक्ष २ वसंत

केई सूत्र पढ़ैं अति हर्ष ठान। केई शास्त्र सुने बहु प्रीति मान॥
कोई जिनगुन गावैं सुर संगीत। कोई नाचैं गावैं धरैं प्रीत॥ १४॥
इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय। वरनन किम मुखतैं कहो जाय॥
सुरपति खगपति जु सोय। रचना देखत मन थकित होय॥ १५
सुर नर विद्याधर हर्ष मान। जिन गुन गावैं हिय प्रीति ठान॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद।

जो सिद्धवर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह संपति नाहि टरे॥
ताको जस सुर नर मिल गावें, 'महेन्द्रकीर्त्ति' जिनभक्त करे १६

दोहा।

सिद्धवरकूट सुथानकी, महिमा अगम अपार।
अल्पमती मैं किमि कहौं, सुरगुरु लहें न पार॥ १७॥

इत्याशीर्वादः।

---

श्रीयुत छगनजी कृत

## १७ चूलगिरि (बावनगजा) की पूजा।

छंद शार्दूलविक्रीडित।

आर्या क्षेत्र विहार बोध भवि ये दशग्रीव सुत भ्रातना।
सम्यक्तादि गुणाष्ट प्राप्ति शिव कर्मारि घाती हना॥
ता भगवान प्रति प्रार्थना सुध हृदै त्वद्भक्ति मम वासना।
आव्हानन विमुक्तनाथ तु पुनः अत्राय तिष्टो जिना॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलिगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक।

गीता छंद।

**पंचम उदधि सम नीर ले, त्रय धार तिन चरणन करों।**
**फिर रुजग जन्म जरारु अंतक, ताहि अब तो परिहरो॥**
**दशग्रीव अंगज अनुज आदि, ऋषीश जहँतें शिव लही।**
**सो शैल बड़वानी निकट गिरिचूलकी पूजा ठही॥**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

**घसि मलय कुमकुम शुद्ध जो, अलिगण न छोड़े तासको।**
**सो गंध शीतल कंद सज, भव-विरह हर भवतापको॥द०॥**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

**शशि वर्ण खंडन मुक्त शोभा, मुक्त नहिं ताकी धरें।**
**सो शालि तंदुल करन मंगल, वेग भय क्षयकी हरें॥द०॥**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

**सुरद्रुम निपज सुरलोकके, बहु वर्ण फूल मंगाइये।**
**अथवा कनक कृत वेल मोगर, चंपकादि चुनाइये॥द०॥**

ॐ ह्री श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

**कृत सूपकार अनूप छह रस, युक्त अमृत मान जो।**
**सो चारु चरु जिन अग्र धर, निज भूख वेदन टारि जो॥द०**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

**बहु मूल्य रत्न उद्योतयुत, भय वायु वरजित जो जगे।**
**सो दीप कंचन थाल धर, अरि दुष्ट मोहादिक भजे॥द०॥**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**दश गंध कृष्णागरु कपूरादिक, सुगंधित ल्यावने।**
**दहि ज्वलन मध्य मनो भवान्तर, सर्वके विधि जालने॥द०**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

**सौमनस नंदन वृक्षके युत, मिष्ट ता फल लेयके।**
**ता देखते दृग घ्राण मोहे, मोक्षपुर कूं वेयके॥ दश०॥**

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

साजि सौंज आठों होय ठाड़ो, हरष बाढ़ो कथन बिन ।
हे नाथ भक्तिवश मिलजो, पुर न छूटे एक दिन ॥ ९०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## ज़यमाला ।

सोरठा ।

करमन कर चकचूर, वसिय शिवालय जाय तुम ।
मेरी आशा पूर, बहुत दुखी संसारमें ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

वंदों श्री युगल ऋषीश स्वाम । कर कर्म युद्ध लहि मोक्ष वाम ॥
है इन्द्रजीत तुम सत्य नाम । कमेन्दु मोहको कियो काम ॥ २ ॥
हो कुंभकर्ण सार्थकहि आप । भवकर्ण ज्ञान तुम कुंभ थाप ॥
कर्मन कृत वंदों गृह मझार । बलि वासुदेवने दये डार ॥ ३ ॥
सत ज्ञान वानि सम्यक्त युक्त । जानों सत चारित आप युक्त ॥
विधु रिपु दुखदाई मूल जान । तापै तुमने खैंची कमान ॥ ४ ॥
औ सर्व जीवसों क्षमा धार । भाई अनुप्रेक्षा परम सार ।
तन आदि अथिर दीखे समस्त । है नेह करन सम कौन वस्त ॥ ५ ॥
अशरण न शरण कहुँ जक्त माहिं । अहमिन्द्रादिक मृत्यू लहाहिं ॥
भवबनमें है नहिं सार कुच्छ । तीर्थंकर त्यागें जान तुच्छ ॥ ६ ॥
ये जीव भ्रमत एकाकि आप । नहीं संग मित्र सुत मात बाप ।
ये देह अन्य फिर कौन मुज्झ । वश मोह परत न हिये सुज्झ ॥ ७ ॥
पल रुधिर पीव मल मूत्र आदि । इनकर निपजी तन होय खाद ॥
जोगनहि चपलता कर्म द्वार । तिन रोक हिये संवर विचार ॥ ८ ॥
तप बल छुटन विधि करम सुक्ख । तिहुँ लोक भ्रमत लहि जीव दुक्ख ॥
बिन बोध भ्रम्यो चहुँ गति मझार । शिवकर्त्ता धर्म करेन धार ॥ ९ ॥

यों चिंतत बहु जन लार लेय। जिनदीक्षा धारी हित करेय॥
अट्ठाइस गुण मुनि मूल धार। चारों अराधना कुं अराध॥ १०॥
नाना विधि आसन धार धार। तप करत युद्ध विधि मार मार॥
'चउ घाति नाश केवल उपाय। भवि जीव बोध जिनवृष लगाय॥११
करके विहार भवि सुक्खदाय। बड़वानी आये अल्प आय॥
गिरि चूल तिष्ठ करि कर्म नाश। छिनमें संसार कियो विनाश॥१२
अति आनंददायक सिद्धक्षेत्र। पूजों भवि जीव निजात्म हेत॥
धन धन्य तिनहिको भाग्य जान। तिन पुण्यबंध होवे महान॥१३॥
इन्द्रादि आय उत्सव अनूप। कीनो लहि हर्षित भये भूप॥
ता गिरिकी उत्तरि दिशि मझार। रेवा सरिता है पूर्ण वार॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्ध-पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

गिरिराज अनूपम पूजे भूपम, तिन भावि कूपम जल दीना।
यामें शक नाहीं कर्म नशाहीं,'छगन'मगन होय थुति कीना॥१५॥

इत्याशीर्वादः।

बाबू पन्नालालजी कृत

## १८ श्रीपटना सिद्धक्षेत्रकी पूजा।

दोहा।

उत्तम देश बिहारमें, पटना नगर सुहायं।
शेठ सुदर्शन शिवं गये, पूजों मन वच काय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपटना सिद्धक्षेत्रसे सुदर्शन शेठ सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

### अष्टक।

नित पूजोरे भाई या श्रावक कुलमें आयकें।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनो॥

गंगाजल अति शुद्ध मनोहर, झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारों नेह लगाई॥ नि०
जंबूद्वीप भरत आरजमें, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवनमें, शिव शेठ सुदर्शन पाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चंदन चंद्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर संग घिसाई।
महक उड़े सब दिशनु मनोहर, पूजों जिनपद राई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

**शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुंज सुहाई।**
**अक्षयपदके कारण भविजन, पूजों मन हरषाई ॥ नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि० ॥३॥

**पांचों विधिके पुष्प सुगंधित, नभलों महक उड़ाई ।**
**पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई ॥नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि० ॥४.॥

**उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त बनाई ।**
**भूख निवारन कंचन थारन, भर भर देहु चढ़ाई ॥ नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि०॥५॥

**मनिमय भाजन घृतसे पूरित, जगमग जोति जगाई ।**
**सब मिल भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई।नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि०॥६॥

**अगर तगर कर्पूर सुहावन, द्रव्य सुगंध मँगाई ।**
**खेवो धूप धूमसे वसुविधि, करम कलंक जराई ॥ नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० ॥७॥

**एला केला लोंग सुपारी, नरियल फल सुखदाई ।**
**भर भर पूजों थाल भविकजन, वांछित फल पाई ॥नि०**

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ॥ ८ ॥

अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढ़ाई।
झालर घंटा नाद बजावो, 'पन्ना' मंगल गाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० ॥९॥

## जयमाला।

दोहा।

शेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान॥ १॥

छंद पद्धरी।

जै शेठ सुदर्शन शीलवंत। जग छाय रही महिमा अनंत॥
तिनकी कछु मैं जैमाल गाय। उर पूज रचाऊँ हर्ष ठाय॥ २॥
जै भरतक्षेत्र मधि अंग देश। चंपापुर सोहे तहँ विषेश॥
नृप धात्रीवाहन राज गेह। प्रिय अभयमती सों अति सनेह॥ ३॥
तहँ मुख्य शेठ इक वृषभदास। तिन शेठानी जिनमतिय खास॥
तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम। मुनि देखे वनमें एक जाम॥ ४॥
सो महामंत्र नवकार पाय। अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय॥
पुनि एक दिवस गंगा मँझार। वह डूबतमें जापत मंत्र सार॥ ५॥
तुरतहिं मर शेठ घरे विशाल। सुत भयो सुदर्शन भाग्यशाल॥
सबको सुखदाई मिष्ट वैन। निज कपिल यार सँग दिवस रैन॥ ६॥
पढ़ि खेल कूद भयो अति सयान। तब शेठ मनोरमा सँग सुजान।
शुभ साइत व्याह दियो कराय। शोभो गत सुख अति हर्ष ठाय॥ ७॥
पुनि कछुक काल भीतर सुकंत। सुत एक भयो अति रूपवंत॥
तब शेठ सुदर्शन धीरवान। निज काम करें अति हर्ष ठान॥ ८॥
तब कपिल नारि आसक्त होय। घर शेठ बुलाये तुरत सोय॥
तहँ शेठ नपुंसक मिस बनाय। निज शील लियो ऐसे बचाय॥ ९॥
जब खबर सुनी रानी तुरंत। मन करी प्रतिज्ञा दीढवंत॥
मैं भोग करूं वासूं सिहाय। तब ही मम जीवन सुफल थाय॥ १०॥

इत शेठ अष्टमी कर उपास। मरघटमें ध्यानारूढ़ खास ॥
तहँ चेली उनके पास जाय। रानीको हाल दियो सुनाय ॥ ११ ॥
तह शेठ निरुत्तर देखि हाय। निज कन्धेपै धरिके उठाय ॥
फिर पहुँची रानी पास जाय। उन अचल देख तुरतै रिसाय॥१२
यों खबर करी नृप पास जाय। मो शील बिगार्‌यो शेठ आय ॥
यों सुनत बैन नृप क्रोध छाय। मारनको हुकम दियो सुनाय॥१३
तहाँ करी प्रतिज्ञा शीलवंत। मुनि पदवी धारूं यदि बचंत ॥
सो देव करी रक्षा सु आय। पुनि दीक्षित ह्वै वनको सिधाय॥१४॥
सो करत करत कछु दिन विहार। तब आए पटना नगर सार ॥
तहँ देवदत्ता वेश्या रहाय। मिस भोजन मुनि लीने बुलाय॥१५॥
उन कामचेष्टा कर सिहाय। झट शेठ लिये शय्या गिराय ॥
लख ऐसो मनमें कर विचार। उपसर्ग मेरो यदि हो निवार ॥१६
सन्यास धरूं नगरी न जाउँ। वन ही वन करंत तप फिराउँ ॥
यह देख वेश्या निरुपाय। निशि प्रेतभूमि दीने पठाय ॥ १७ ॥
तहँ रानी व्यंतर जोनि पाय। नाना उपसर्ग कियो बनाय ॥
मुनि पुण्यभाव से यक्ष आय। तब लिए शेठ तुरतै बचाय ॥१८ ॥
सो कठिन तपस्या कर निदान। भयो शेठ जहाँ केवल जु ज्ञान ॥
सो कछुक काल करकें विहार। उन मुक्ति वरी अति श्रेष्ठ नार॥१९॥

घत्ता।

इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, शेठ सुदर्शन तन पाई ॥
सुत लालबिहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' यह पूजा गाई ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

पं० दीपचंदजी परवार कृत

## १९ श्रीबाहूबली पूजा।

अडिल्ल छंद ।

आदीश्वरके द्वितीय पुत्र बाहूबली ।
कामदेव भये प्रथम श्रीबाहूबली ॥
नये न मस्तक युद्ध कियो बाहूबली ।
चक्री अरु विधि जीत जजूं बाहूबली ॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनापुरके उद्यानसे श्रीबाहूबलीस्वामी मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं । तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सान्निधिकरणं ।

## अष्टक ।

पंचम उदधितनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरूं ।
जन्म जरा मृतु नाश करनको, बाहूबलि पद धार करूं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर संग घिसूं मलयागिरि, चन्दन अधिक सुगंध रचूं ।
भव आताप विनाशन कारन, श्रीबाहूबलि पद चरचूँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० ॥ २ ॥

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर कंचन थाल भरूं।
अक्षयपदके हेतु विनयसे, बाहूबलि ढिग पुंज करूं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि०॥३॥

कमल केतुकी चंप चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरूं।
मदनवान निरवारन कारन, बाहूबलिको भेंट करूं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नाना विध पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट् रसमय।
क्षुधारोग विध्वंश करनको, जजूं बाहूबलि चरन उभय॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

सजो द्वीप घृत वा कर्पूरका, जासों दश दिक् तम भागे।
नाशन अंतर तमको आरति, करूं बाहूबलि प्रभु आगे॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर धूप दश,-अंगी अगनीमें खेऊं।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करनको, श्रीबाहूबलि पद सेऊं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निं०॥ ७॥

**आम अनार जाम नारंगी, पुंगी खारक श्रीफलको ।**
**मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पन करूं बाहूबलिको ॥**

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् मोक्षफल प्राप्तये फलं नि०॥ ८॥

**ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भरके लाऊं ।**
**पद अनर्घके प्राप्ति हेतु मैं, श्रीबाहूबलि गुण गाऊं ॥**

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि० ॥ ९॥

दोहा ।

बाहूबलि निज बाहु बल, हरे शत्रु बलवान ।
जये नये नहिं सिद्ध भये पोदनपुर उद्यान ॥१॥

## जयमाला ।

पद्धड़ी छंद ।

श्रीआदीश्वरके सुत सुजान । हैं प्रथम भरत चक्री महान ॥
दूजे बाहूबलि बल अपार । पुनि एक ऊनशत हैं कुमार ॥ २ ॥
सब ही हैं चर्म शरीर सोय । सब ही पहुँचे शिव कर्म खोय ॥
तिनमें बाहूबलि द्वितिय पुत्र । रतिपाति तिनको सुनिये चरित्र ॥३॥
जब ऋषभ ऋषीपद धरो सार । तब राज भाग कीने विचार ॥
अरु दिये यथाविधि नृपन दान । सब करें प्रजा पालन सुजान ॥४॥
तिनमें श्रीबाहूबलि कुमार । पायो पोदनपुर राज्य सार ॥
अरु भरत अवधिपुर भये नरेश । सुख भोगें बहु विधि सुरेश ॥५॥
जब उदय चक्रिपद भयो आय । षट् खंड साधने गये राय ॥
अरु किये बहुत नृप निजाधीन । फिर लौटे रजधानी प्रवीन ॥६॥

पर चक्र करो नहिं पुर प्रवेश। तब निमती भाष्यो सुन नरेश॥
तुम भ्रात पोदनापुर नरेन्द्र। नहीं आज्ञा माने तुझ नृपेन्द्र॥७॥
सुन भरत तबहि पाती लिखाय। पोदनपुर दूत दियो पठाय॥
आ नमों भेंटयुत विनय धार। या हो जावो रणको तयार॥८॥
वैसांदर जिमि घृत परे आय। तिमि कोपो भुजबलि पत्र पाय॥
फिर फाड़ पत्र कहे सुनहु दूत। हम और भरत द्वय ऋषभ पूत॥९॥
हम भोगे पितुको दियो राज। भरतहिं शिर नावें कौन काज॥
यदि भरत अधिक कर है गरूर। तो करि हों रणमें चूर चूर॥१०॥
सुन भज्यो दूत गयो भरत पास। कह दिनों सब वृत्तान्त खास॥
तब सजी सैन्य लख उभय ओर। मंत्री गण सोचे हिय बहोर॥११॥
ये उभय बली अरु चरम देह। लड़ व्यर्थ सैन्यको क्षय करेह॥
इमि सोच गये निज नृपन पास। बिन्ती सुनिये प्रभु कहहिं दास१२
तुम उभय बली अरु स्वयमबुद्ध। नहिं सैन्य मरें कीजे सु युद्ध॥
तब नेत्र मल्ल जल तीन युद्ध। कीने द्वय भ्रात स्वयम प्रबुद्ध॥१३॥
तीनोंमें हारे भरत राय। तब कोप चक्र दीनो चलाय॥
सो चक्र करो नाहिं गोत्र घात। चक्री इमि सब विधि खाई मात॥१४
यह देख चरित भुजबलि कुमार। उपजौ हिय दृढ़ वैराग्य सार॥
अरु त्याग राज तृणवत असार। कर क्षमा महाव्रत धरे सार॥१५॥
तप एकाशन कीनो महान। पर उपजो नाहिं केवल सुज्ञान॥
इक शल्य लग रही इति लार। मैं खड़ो भरत पृथ्वी मझार॥१६॥
तब शल्य दूरकी भरतराय। नाहिं वसुधापति कोई जग बनाय॥
यह आदि अंत बिन जग महान। बहुते भये है हैं मुझ समान॥१७॥
इमि सुनत शल्य हनि घाति चार। उपजायो केवलज्ञान सार॥
फिर पोदनपुरके वन मझार। पंचमगति लहि कर कर्म क्षार॥१८॥
तिन प्रतिमा अतिशय युत अपार। है श्रवणवेलगोला मझार॥
गौमटस्वामी तिहँ कहत सोय। नहिं छाया ताकी पड़त कोय॥१९॥

**अरु तुंग हाथ छव्वीस धार। निरधार खड़ी पर्वत मझार॥**
**यात्री आवें वंदन अपार। दर्शन कर पातक करें क्षार॥ २०॥**
**इत्यादि और अतिशय अपार। कथ 'दीपचन्द' नाहिं लहे पार॥**

ॐ ह्रीश्रीमद्बाहूबालिस्वामिन् पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

**सब विधि सुखकारी महिमा भारी, भुजबलि थारी अपरम्पार।**
**सुन विनय हमारी शिवं सुखकारी, हे त्रिपुरारी अचल अपार॥**

**इत्याशीर्वादः।**

स्वं० कविवर द्यानतरायजी कृत ।

## २० चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा ।

सोरठा ।

**परम पूज्य चौवीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।**
**सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं ॥ १ ॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र अवतरत अवतरत । संवौषट् । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत । वषट् ।

### अष्टक ।

गीता छंद ।

**शुचि क्षीरदधिसम नीर निरमल, कनकझारीमें भरौं ।**
**संसारपार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं ॥**
**सम्मेदगिरि गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकौं ।**
**पूजों सदा चौवीसजिननिर्वाणभूमि निवासकौं ॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

**केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं ।**
**भवपापको संताप मेटौ, जोर कर विनती करौं ॥ सम्मे० ॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

**मोतीसमान अखंड तंदुल, अमल आनँदधरि तरौं ।**
**औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं । स० ॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं ।
दुखधाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं । स० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४

नेवज अनेकप्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं ।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं ॥ स० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशयविमोहविभरम-तमहर, जोर कर विनती करौं । स० ॥

ॐ ह्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं ।
सब करमपुंज जलाय दीजे, जोर कर विनती करौं ॥ स० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकतफल देहु मोकौं, जोर कर विनती करौं । स० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगततैं, जोर कर विनती करौं

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९

## जयमाला ।

सोरठा ।

श्रीचौबीसजिनेश, गिरिकैलासादिक नमों ।
तीरथमहाप्रदेश, महापुरुषनिरवाणतैं ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमों रिषभ कैलासपहारं । नेमिनाथ गिरनार निहारं ॥
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं । सनमति पावापुर अभिनंदौ ॥ २ ॥
वंदौं अजित अजितपददाता । वंदौं संभवभवदुखघाता ॥
वंदौं अभिनंदन गणनायक । वंदौं सुमति सुमतिके दायक ॥ ३
वंदौं पदम मुकतिपदमाधर । वंदौं सुपार्स आशपासा हर ॥
वंदौं चंदप्रभ प्रभु चंदा । वंदौं सुविधि सुविधिनिधिकंदा ॥ ४ ।
वंदौं शीतल अघतपशीतल । वंदौं श्रियांस श्रियांस महीतल ॥
वंदौं विमल विमलउपयोगी । वंदौं अनँत अनँतसुभोगी ॥ ५ ।
वंदौं धर्म धर्मविसतारा । वंदौं शांति शांतमनधारा ॥
वंदौं कुंथु कुंथरखवालं । वंदौं अरि अरिहर गुनमालं ॥ ६ ॥
वंदौं मल्लि काममल चूरन । वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन ॥
वंदौं नमि जिन नमित सुरासुर । वंदौं पास पासभ्रमजरहर ॥७॥
वीसौं सिद्ध भूमि जा ऊपर ॥ सिखरसम्मेद महागिरि भूपर ॥
एक बार वंदे जो कोई । ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥ ८ ॥
नरगतिनृप सुर शक्र कहावै । तिहुँजग भोग भोगि शिव पावै ॥
विघनविनाशक मंगलकारी । गुणविलास वंदें नरनारी ॥ ९ ॥

छंद घत्ता ।

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै ।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुणको बुध उचरै ॥१०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

( इस अर्घ्यके बाद शांतिपाठ बादमें विसर्जन करना चाहिये । )

समाप्त ।